वृक्षन से मति ले

सन्त-कवि सूरदास द्वारा रचित भजन

संगीत-रचना : गुरुमाई चिद्विलासानन्द

ध्रुवपद

वृक्षन से मति ले, मन तू वृक्षन से मति ले ॥

हे मेरे मन, तू वृक्षों से मति [ज्ञान] ले;
तू भगवान के इन प्रतिबिम्बों से ज्ञान ले।

पद १

काटे वाको क्रोध न करहीं, सिञ्चत न करहीं नेह ॥

वे उन पर क्रोध नहीं करते जो उन्हें काटते हैं,
और न ही उनसे स्नेह करते हैं जो उन्हें सींचते हैं।

पद २

धूप सहत अपने सिर ऊपर, और को छाँह करेत ॥

वे सूरज की कड़ी धूप को अपने सिर पर सह लेते हैं
और दूसरों को छाया देते हैं।

पद ३

जो वाही को पथर चलावे, ताही को फल देत ॥

यहाँ तक कि जो उन पर पत्थर फेंकते हैं,
उन्हें भी वे अपने फल देते हैं।

पद ४

धन्य-धन्य हे परउपकारी, वृथा मनुज की देह ॥

जो मनुष्य वृक्षों की भाँति परोपकारी है, वह धन्य है;
और जो मनुष्य ऐसा नहीं है, वह अपना मनुष्य-जन्म व्यर्थ गवाँ रहा है।

पद ५

सूरदास प्रभु कहँ लगि बरनौं, हरिजन की मति ले ॥

सूरदास जी कहते हैं : मैं उन प्रभु की महिमा का वर्णन कहाँ तक करूँ
जो इतने भव्य रूप में प्रकृति में प्रकट हैं!
ईश्वर को जानने के लिए तुम्हें महात्माओं से ज्ञान लेना चाहिए
अर्थात् उनसे जो ईश्वर में लीन हैं।

गुरुदेव सिद्धपीठ की संगीत मण्डली द्वारा प्रस्तुत।

मानसी जैन द्वारा लिखित परिचय

'वृक्षन से मति ले' भजन में सोलहवीं शताब्दी के सन्त-कवि सूरदास जी हमसे आग्रह करते हैं कि हम वृक्षों से ज्ञान प्राप्त करें। उनके भजन में निहित चित्ताकर्षक सिखावनियों को गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने वर्ष २००० में बड़ी ही सुन्दरता से, प्रशान्तिपूर्ण व केन्द्रित करने वाली धुन में पिरोया है। और अब आप आमन्त्रित हैं कि आप श्रीगुरुमाई के वर्ष २०२४ के सन्देश-अध्ययन के एक भाग के रूप में व गुरुमाई जी के जन्मदिवस माह 'आनन्दमय जन्मदिवस' का महोत्सव मनाते हुए इस भजन को सीखें व इसमें निमग्न हों।

मात्र कुछ बार इस भजन को सुनने के बाद, मैंने पाया कि मैं पूरे दिन इसे लगातार गा रही थी। एक शाम अपनी साप्ताहिक हठयोग की कक्षा के दौरान मुझे महसूस हुआ कि आसन को करते हुए मुझे अपना सन्तुलन बनाए रखने में रोज़ की तुलना में कुछ अधिक कठिनाई हो रही है। तब अपने आसन को ठीक करने के साथ-साथ मैंने अपना ध्यान, मन में चल रहे इस भजन पर केन्द्रित किया—ध्रुवपद के अवरोही स्वरों से मेरी जागरूकता पंजों पर केन्द्रित हुई और इससे मुझे स्थिरता महसूस करने में मदद मिली, जबकि भजन के अन्तरों के आरोही स्वरों ने मुझे प्रोत्साहित किया कि मैं अपनी रीढ़ की हड्डी को और भी ऊपर की ओर लम्बा करूँ। मैंने मज़बूती और लचीलापन, दोनों एक-साथ महसूस किए। समस्थिति के इस क्षण में मैंने अपनी आँखें बन्द कीं और अपने मन की आँखों से वर्ष २०२४ के लिए श्रीगुरुमाई की सन्देश-कलाकृति में दर्शाए गए, भव्य वृक्षों से भरे वन को देखा।

***

सूरदास जी ने 'वृक्षन से मति ले' भजन को ब्रजभाषा में लिखा। यह हिन्दी की एक बोली है जो उनके समय में उत्तर भारत के क्षेत्रों में आम तौर पर बोली जाने वाली भाषा थी। सूरदास जी जन्म से ही नेत्रहीन थे और उन्होंने ईश्वर के प्रति अपने अथाह प्रेम को अभिव्यक्त करने के लिए भजनों व काव्यों की रचना करने में अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस भजन में सूरदास जी वृक्षों में निहित ज्ञान व उदारता का गुणगान करते हैं और कहते हैं कि वृक्ष ईश्वर के प्रतिबिम्ब हैं। सन्त-कवि कहते हैं कि वृक्ष न तो उन लोगों का पक्ष लेते हैं जो उनकी देखभाल करते हैं और न ही उन लोगों से निराश होते हैं जो उनकी उपेक्षा करते हैं। यहाँ तक कि वृक्ष उन लोगों को भी अपने फल देते हैं जो उन्हें हानि पहुँचाते हैं।

दूसरे शब्दों में कहें तो वृक्ष अनासक्त व निरपेक्ष होते हैं और अहैतुक उदारता का परिचय देते हैं। एक वैज्ञानिक होने के नाते मैं वृक्षों को प्रकृति में निहित परस्पर सम्बन्ध के प्रतीक के रूप में देखती हूँ—और

यही परस्पर सम्बन्ध उन्हें वह शक्ति देता है जिसका वर्णन सूरदास जी करते हैं। जब हम एक वृक्ष के बारे में सोचते हैं तो आम तौर पर हमारे सामने उसके तने और शाखाओं की छवि उभरती है, परन्तु हम अकसर उसकी फैली हुई जड़ों को भूल जाते हैं। तथापि जड़ों की यह शक्तिशाली व्यवस्था ही है जो वृक्ष को दृढ़ता से जमाए रखती है, उसे स्थिरता व पोषण प्रदान करती है। इतना ही नहीं, जड़ें उस अदृश्य जगत का भाग हैं जो एक वृक्ष को दूसरे वृक्ष से जोड़ता है। वृक्ष की जड़ें उसके हृदय के जैसी होती हैं और वृक्ष का अस्तित्व इस बात पर निर्भर होता है कि वह कितनी मज़बूती से अपने हृदय से जुड़ा हुआ है।

इसके अलावा, वृक्ष सूर्य के प्रकाश को ढूँढ़ते हैं और उसकी ओर बढ़ते हैं। सूर्यप्रकाश की चमक वृक्ष को भौतिक रूप से बढ़ने में उसका मार्गदर्शन करती है और उसका बल बढ़ाती है। और यह बल वृक्ष को ऊँचा होने में मदद करने के साथ-साथ, यह भी सुनिश्चित करता है कि वृक्ष के आस-पास की हवा की शुद्धि हो। वृक्ष सूर्यप्रकाश का उपयोग कर ऑक्सीजन बनाते हैं और उसे वातावरण में छोड़ते हैं। इस तरह हर वृक्ष का विकास एक अनोखे चक्र में होता रहता है जो हमारे ग्रह को लाभ पहुँचाता है और साथ ही इसका पोषण भी करता है। सूरदास जी कहते हैं कि वह व्यक्ति धन्य है जो वृक्षों की तरह अपने आस-पास के संसार में परोपकार का परिचय देता है। वृक्ष जिस ज्ञान व सद्‌गुणों के आदर्श हैं, उसे विकसित करके हम अपने आस-पास के वातावरण को लाभान्वित कर सकते हैं।

***

गुरुमाई जी ने इस भजन को राग रेवती में संगीतबद्ध किया है। कई वैदिक ऋचाओं और श्लोकों का पाठ इस राग में किया जाता है। कहा जाता है कि राग रेवती मन को शान्त करता है और आवेगपूर्ण भावनाओं को दूर करता है। इस राग के गुण व भजन के शब्द एक-साथ मिलकर हमें आमन्त्रित करते हैं कि हम परोपकारी व स्थिरचित्त बनें—दूसरे शब्दों में कहें तो हम वृक्षों जैसे बनें।

'वृक्षन से मति ले' की इस रिकॉर्डिंग को गुरुदेव सिद्धपीठ की संगीत मण्डली ने गाया है। साथ ही यहाँ भजन के शब्द व उनका भाषान्तर भी शामिल है। मैं आपको आमन्त्रित करती हूँ कि आप इस भजन को बार-बार पढ़ें और सुनें; इस पर मनन-चिन्तन करें, इसे गाएँ और इसे कण्ठस्थ करें—ताकि आप इसकी सुन्दरता का रसास्वादन कर सकें और इसकी सिखावनियों को अपने हृदय में पैठने दें।

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।